वैश्विक संस्कृति का भारत पर प्रभाव

डॉ० संजीव कुमार प्रभाकर (वाणिज्य) ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ग्राम- बुंदेलखंड, पो- बासोपट्टी भाया-बासोपट्टी, जिला-मधुबनी (बिहार)847225

प्रस्तावना :-

वैश्वीकरण अथवा भूमंडलीकरण को जगतीकरण भी कहा जाता है जो एक अंतरराष्ट्रीय मंच है वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ पूरे विश्व का एकीकरण। एकीकरण से तात्पर्य यह है कि विश्व के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से है जहां अप्रतिबंधित रूप से एक देश से दूसरे देश तक विभिन्न उत्पादों, विचारों एवं मूल्यों आदि का आदान प्रदान किया जाता है वैश्वीकरण के कारण पूरे विश्व का बाजार एक "गांव" सा बन गया है। जहां तक "ग्लोबल संस्कृति" की बात है तो इसमें दुनिया भर के विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं यथा विचार, खान-पान, रहन-सहन, जीवन शैली, जीवन स्तर, बौद्धिक संपदा एवं परंपराओं आदि एक मंच पर देखने को मिलता है।

अतः कहा जा सकता है कि विश्व के विभिन्न देशों के बीच विचारों एवं बौद्धिक संपदाओं का अप्रतिबंधित लेन-देन ही वैश्विक संस्कृति कहलाता है।

<u>परिचय</u> :-

यूरोपीय देशों में 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली विस्तार के साथ ही वैश्वीकरण की शुरुआत मानी जाती है लेकिन ग्लोबल शब्द का वास्तविक प्रयोग दुनिया से संबंधित (Belonging to the World) या पूरे संसार (World Wide) के रूप में 1960 के दशक में माना जाता है जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 1960 से पूर्व पूरे विश्व को दो भयंकर युद्ध का सामना करना पड़ा जिस कारण विश्व के कई देशों की आर्थिक प्रणाली चरमरा गई थी एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र भी संकुचित हो गया था अतः इस वैश्विक व्यापार को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित करने के लिए वैश्वीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया गया जिसका प्रभाव यह हुआ कि विश्व के विभिन्न देशों के समाजशास्त्री, अर्थशास्त्रियों एवं राजनेताओं ने वैश्वीकरण के महता पर गहन विचार-विमर्श किया जिसका परिणाम यह हुआ कि विश्व के विभिन्न देशों ने धीरे-धीरे वैश्वीकरण के अपनाना शुरू किया। वर्तमान में सूचना एवं संचार क्रांति ने तो पूरी दुनिया को ही 'परिवार' बना दिया है। वैश्वीकरण के नए आयाम तक पहुंचने में विश्व के अनेक शीर्ष संस्थानों यथा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (1944), विश्व बैंक (1944), संयुक्त राष्ट्र संघ (1945) एवं विश्व व्यापार संगठन (1995) आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। वैश्वीकरण के कारण विगत वर्षों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है एक अनुमान के अनुसार विश्व व्यापार में जहां 20 गुना वृद्धि हुई है वहीं विश्व के सकल उत्पाद में 3 गुना वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण ने न केवल विश्व उत्पाद को आपस में जोड़ा है बल्कि वैश्विक संस्कृति के महत्व को कई गुना बढ़ा दिया है। जोड़न का कार्य किया। सूचना एवं संचार तकनीकी ने तो वैश्विक संस्कृति के महत्व को कई गुना बढ़ा दिया है।

वैधीकरण के प्रमुख आयाम

- 🕨 आर्थिक आयाम :-
- 🕨 राजनीतिक आयाम :-

🕨 सामाजिक - संस्कृतिक आयाम :-

वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषताएं

- 🕨 नई सूचना प्रसार :-
- र्मूचना एवं संचार :-
- 🗲 ई-कॉमर्स :-
- > सामाजिक सांस्कृतिक क्रियाओं का अंतरराष्ट्रीय सीमा तक विस्तार :-
- श्रम का विश्वव्यापी करण

वैश्विक संस्कृति एवं भारत

वर्तमान समय में बाजारीकरण एवं निजी करण के कारण विकासशील देशों के सरकारों को वैश्विक अर्थव्यवस्था का पालन करना पड़ता है जिसका परिणाम यह है कि आज सामाजिक व्यवस्था बदलती जा रही है जहां पहले राष्ट्रीय संस्कृति का केंद्र नागरिक हुआ करता था वहां आज के वैश्विक संस्कृति का केंद्र भूमंडलीय उपभोक्ता हो गया है जिस कारण आज उत्पीड़न, विषमता एवं अन्याय जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही है लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि "एक अच्छी संस्कृति एक अच्छी ऑक्सीजन के समान" होता है। संस्कृति ही एक ऐसी विचारधारा है जो हमें किसी समुदाय में होने एवं उनके जड़ों से जुड़े होने का एहसास दिलाता है। वैश्वीकरण जातीय विभेद, सांस्कृतिक विभेद एवं अन्य विविधताओं को मिटाकर एक समान वैश्विक संस्कृति, समान सभ्यता एवं समान रुचिओं का "विश्व मॉडल" बनाने की प्रवृत्ति रखता है। आज के इस वैश्विक बाजार में अनेक संस्कृतियों का एकीकरण का प्रयास किया जा रहा है।

जहां तक भारतीय परिपेक्ष्य में देखा जाए तो वैश्विक संस्कृति हमारे क्षेत्रीय और स्थानीय संस्कृति को पृष्ठभूमि में धकेल रही है जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृति का देश है यहां विभिन्न धर्मों एवं जातियों के लोग, विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करते हैं एवं विभिन्न प्रकार के रहन-सहन के साथ विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करते हुए विभिन्न परंपराओं का अनुश्रवण करते हैं।

अतः सत्य है कि वैश्विक संस्कृति के कारण आज पूरे विश्व की सामाजिक संस्कृति का एक दूसरे से अनुकरण होना शुरू हो गया है भारत की संस्कृति को विश्व के अन्य देशों में अच्छी पहचान के साथ देखा जाता है लेकिन "ग्लोबल संस्कृति" के कारण भारत में पश्चिमी संस्कृति का कुछ ज्यादा ही नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि भारत की संस्कृति अन्य देशों का प्रेरणा स्नोत माना जाता रहा है लेकिन आज "ग्लोबल संस्कृति" के कारण भारतीय संस्कृति को नागरिक संस्कृति का रूप न देकर उपभोक्तावादी संस्कृति का रूप दिया जा रहा है फलतः कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति का हास होता जा रहा है|

<u>वैक्षिक संस्कृति का भारत पर प्रभाव</u>

- 1. <u>परिवारिक संरचना</u>: जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार को अधिक महत्व देती है जिसमें सभी सदस्यों का उचित देखभाल आदर के साथ किया जाता है| लेकिन "ग्लोबल संस्कृति" के कारण लोग संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की ओर तेजी से बढ़ रहा है जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति स्वार्थ हीन बनते जा रहे हैं एवं अपने माता पिता को अनादर करते हैं जो भारतीय संस्कृति के लिए उचित नहीं है|
- 2. शादी सम्मान :- भारतीय समाज में शादी को सम्मान का दर्जा प्राप्त है जिसका सामाजिक महत्व प्राप्त है लेकिन "ग्लोबल संस्कृति" के कारण शादी एक पेशेवर का रूप धारण कर लिया है जिस कारण पित-पत्नी में आपसी सामंजस्य का अभाव पाया जाता है फलस्वरूप शादी विच्छेद की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है
- 3. सामाजिक मूल्य :- "ग्लोबल संस्कृति" के कारण लोग आर्थिक पहलुओं की ओर ज्यादा केंद्रित हो रहा है जिससे लोगों के अंदर सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है लोग अपने से बड़े को एवं अपने मेहमानों को उचित सम्मान नहीं दे रहे हैं लोगों में एकता का अभाव देखा जा रहा है लोग होली एवं दीपावली जैसे पारंपरिक एवं धार्मिक त्योहारों के जगह बनावटी एवं कृत्रिम त्योहारों पर अधिक समय एवं धन बर्बाद कर रहे हैं।
- 4. भोजन :- "ग्लोबल संस्कृति" का भारतीय खान-पान पर विशेष प्रभाव पड़ा है जहां लोग भारतीय व्यंजनों को त्याग कर फास्ट फूड, जंक फूड आदि विदेशी व्यंजनों को अपना रहे हैं जो स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है
- 5. <u>परिधान (पोशाक)</u>:- "ग्लोबल संस्कृति" का भारतीय परिधान पर भी विशेष प्रभाव पड़ा है उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि महिलाएं साड़ी के जगह सूट-सलवार, लड़कियां सामान्य ड्रेस के जगह जींस, टीशर्ट, स्कर्ट एवं पुरुष धोती-कुर्ता के जगह फुल पैंट एवं शर्ट पहनना शुरू कर दिए हैं।
- 6. भाषा :- "ग्लोबल संस्कृति" के कारण आज लोग राष्ट्रभाषा के जगह अनेक विदेशी भाषाओं जैसे स्पेनिश, जर्मन आदि की ओर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं साथ ही हिंदी की जगह अंग्रेजी भाषाओं के उपयोग पर ज्यादा बल दे रहे हैं।
- 7. **कृषि एवं रोजगार** :- भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां लोग पारंपरिक ढंग से खेती का काम करता आ रहा था लेकिन "ग्लोबल संस्कृति" के कारण इन क्षेत्रों में भी नई नई तकनीकी का प्रयोग होना शुरू हो गया जिसका परिणाम यह हुआ कि खेती में पैदावार बढ़ी, धन एवं समय का बचत हुआ लेकिन यहां निवास करने वाले कृषि मजदूरों के कार्य में कटौती हो गई।
- 8. <u>व्यभिचार</u>: "ग्लोबल संस्कृति" के कारण लोगों के नैतिकता का हास हो गया है लोग भारत जैसे सभ्य संस्कृति को छोड़कर बलात्कार, यौन शोषण एवं अन्य घृणित कार्य पर उतर आए हैं|

निष्कर्ष :-

वैश्वीकरण एक अंतरराष्ट्रीय मंच है जिसमें पूरा वैश्विक बाजार एक गांव है जहां तक "ग्लोबल संस्कृति" के भारत पर प्रभाव की बात है तो यह कहा जा सकता है कि इसमें सकारात्मकता एवं नकारात्मकता दोनों है जहां तक सकारात्मक पहलुओं की बात है तो भारत ने सोशल मीडिया एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की है लेकिन जहां तक वैश्विक संस्कृति के नकारात्मक पहलू की बात है भारत जैसे देश में एकल परिवार, वृद्धाश्रम, अस्थाई शादी, बड़ों के प्रति अनादर, सामाजिक मूल्यों का हास, अमर्यादित पोशाक आदि ने भारतीय संस्कृति को रसातल की ओर धकेल रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय संस्कृति की अपनी अलग गरिमा रही है वे अपनी शालीनता एवं महानता ओं के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है।

लेकिन आज के इस आर्थिक दौर में वैश्वीकरण अपनाना जरूरी है लेकिन जरूरी इस बात की भी है कि वैश्वीकरण को ठीक ढंग से अपनाया जाए ताकि "ग्लोबल संस्कृति" का प्रभाव इस तरह पड़े कि हमारी भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा बनी रहे|

सन्दर्भ :-

- 1. खोर, माटिन रिथिकिंग, ग्लोबलाइजेशन,क्रिटिकल इशुज एंड पॉलिसी चाइसिज, बुक्स कार चेंज , बंगलोरे (2001)
- 2. कमलजीत सिंह वैश्वीकरण? वैश्वीकरण समर्थक बौद्धिक छल का खुलासा, जितेंद्र गुप्ता संवाद प्रकाशन, मेरठ (2008)
- 3. भारती भवन प्रकाशन एवं वितरण, पटना .(2015)
- 4. समय एवं संस्कृति श्याम चरण दुबे (2008)
- 5. भारतीय अर्थव्यवस्था (वर्ग xi) एनसीआरटी नई दिल्ली
- 6. गर्ग, आनंद स्वरूप (2000), अर्थशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा

